Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

पर्यटन उद्योग में भूगोल का महत्व

Dr. Mahendra Pal Singh
Assistant Professor (Tourism Management)
Department of Business Management
& Entrepreneurship
Dr. Rammanohar Lohia Avadh University,
Ayodhya (UP)

Dr. Ajeet Kumar Mishra
Assistant Professor
Depratment of Geography
L.B.S. P.G. College,
Gonda (UP)

उद्देश्य:– पर्यटन भूगोल, भूगोल की वह शाखा है, जिसमें पृथ्वी पर प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विविधताओं का अवलोकन सही क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक विधि से ज्ञानवर्धन वातावरण परिवर्तन, आमोद–प्रमोद एवं स्वास्थ्य लाभ प्राप्ति के लिए किये जाते हो। पर्यटन भूगोल एवं उद्योग के रूप में और एक सामाजिक और पर्यटन का अध्ययन है। पर्यटन भूगोल मानव भूगोल की वह शाखा है जो यात्रा के अध्ययन और स्थानों पर इसके प्रभाव से सम्बन्धित है।

भूगोल स्थानों और लोगों और उनके वातावरण के बीच सम्बन्धों का अध्ययन है। भूगोलवेत्ता पृथ्वी की सतह के भौतिक गुणों और उसके चारों ओर फैले मानव समाजों का पता लगाते है। भूगोल समझने की कोशिश करता है कि चीजें कहां पाई जाती है, वे वहां क्यों है, और वे कैसे विकसित लेते है और समय के साथ बदलते है।

वर्तमान में भूगोल भौतिक तथा सामाजिक विज्ञानों दोनों में सम्मिलित है। इसमें भौतिक वातावरण तथा सांस्कृतिक वातावरण के तत्वों का, उनकी शाक्तियों और क्रियाओं तथा प्रभावों का अध्ययन होता है। इसका लक्ष्य पृथ्वी तल पर प्राकृतिक वातावरण और समस्त मावन जाति की पारस्परिक प्रतिक्रिया प्रणाली को समझना है तथा इसका कार्य भौतिक विज्ञानों, मानवीय विज्ञानों को परस्पर जोडने वाली एक महत्वपूर्ण कडी का है। अन्य विज्ञानों की तरह भूगोल का उद्देश्य भी समाज कल्याण के प्रति अधिकतम योगदान देना है।

इसी प्रकार पर्यटन भूगोल भी मानव के कल्याण एवं सुख समृद्धि से जुडी भूगोल की नवीनतम् शाखा है। देश की भौगोलिक विशेषतांए, परिस्थिति की विविधता तथा भारत में पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं जानना चाहे तो ऐसे प्रश्नों का जवाब पर्यटन भूगोल के द्वारा बताया जा सकता है। इसी प्रकार कई प्रकार की जानकारियॉ पर्यटन भूगोल से प्राप्त की जा सकती है। भूगोल का उद्देश्य धरातलीय एवं माानवीय विभिन्नताओं का अध्ययन करना है तथा पर्यटन द्वारा इन्हीं विविधताओं का अवलोकन कर ज्ञान की वृद्धि एवं मनोरंजन करता है। पर्यटन भूगोल के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैः–

1. पृथ्वी धरातल पर अनेक सांस्कृतिक विविधताओं जैसे प्राचीन स्मारक, किले, आवास, स्थापत्यकला, वास्तुकला, चित्रकला, ललितकला, नृत्यकलाओं आदि को मानव के लिए खोजना।

2. धरातल पर अनेक प्राकृतिक विचित्रतायें जैसे– धरातलीय स्थलाकृति, पर्वत, पठार, मैदान, मरूस्थल, जैविक, अजैविक, प्राकृतिक आदि मानव के लिए खोजना।
3. मानव को नीरसता, ऊब तथा एकाकी जीवन से सुरमय प्राकृतिक छटा के बीच ले जाना क्योंकि प्रकृति सबसे बड़ी औषधि है।
4. मानव के वर्तमान तनाव, डिप्रेशन भरे जीवन में ताजगी लाना। नयी ऊष्मा का संचार कर उमंग एवं उल्लास प्रदान करना।
5. मानव के ज्ञान में अभिवृद्धि करना, पर्यटन से मानव को यथार्थ, वस्तुपरक ज्ञान दिलाना है जो किताबी ज्ञान से बढकर है।
6. पर्यटन द्वारा मानव को पर्यावरण एवं परिस्थितियों तथा विभिन्न प्रकार के प्रदूषण (जल, भूमि, वायु, ध्वनि आदि) का आनुभाविक ज्ञान देना है। इससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना का विकास होता है।
7. पर्यटन से आय होती है जिससे राष्ट्रीय महत्व की स्मारकें, इमारतें तथा वास्तुकला के अनमोल धरोहरों एवं संग्रहालयों का रख–रखाव आसान हो जाता है।
8. पर्यटन द्वारा वातावरण और मानव वर्गों के अन्तः सम्बन्धों को समझनें में सहायता मिलती है।
9. पर्यटन भूगोल पृथ्वी तल के विभिन्न तथ्यों का अध्ययन देश, काल और सम्बन्धों के त्रिपक्षीय दृष्टिकोण से करता है।
10. पर्यटन भूगोल संसाधन विकास योजना में सहायता प्रदान करता है तथा रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

पर्यटन का अर्थः–

पर्यटन एक आर्थिक प्रक्रिया है, आर्थिक प्रक्रियाओं की तरह इससे मांग की उत्पत्ति होती है तथा अन्य उद्योग के लिए मार्केट प्रदान करती है। इस प्रकार पर्यटन को दो मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता हैः– प्रथम स्थिर क्षेत्र एवं द्वितीय अस्थिर क्षेत्र। स्थिर क्षेत्र के अर्न्तगत परिवहन प्रचालकों, यात्रा अभिकर्ताओं, परिवहन संस्थाओं एवं अन्य सहायक सेवा की क्रियांए सम्मलित हैं। अस्थिर क्षेत्र के अन्तर्गत अल्पकालीन प्रवास, आवास सुविधा, खान–पान की मांग आदि क्रियाएं शामिल की जा सकती है।

अंग्रेजी शब्द Tourism का सम्बन्ध Tour से है जो कि लैटिन भाषा से लिया गया है। Tornos का अर्थ एक औजार से है जो एक पहिए की भॉति गोलाकार होता है। इसी शब्द से यात्रा चक्र का पैकेज टूर या एकसमान यात्रा का विचार सृजित हुआ है जो कि आधुनिक पर्यटन पर्यटन का मुख्य आधार है। टुअर का अर्थ है कि यात्री किसी विशेष स्थान पर जाकर खोज करता है। ठीक इसी प्रकार एक पर्यटक की जिज्ञासा होती है कि वह उस स्थान के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करे, जिसके बारे में उसने सुना है।

इस प्रकार पर्यटन शब्द के अन्तर्गत वे समस्त व्यापारिक क्रियाएं सम्मलित है कि जो कि पर्यटकों की आवश्यकता की पूर्ति करती हैं। किसी भी यात्रा का पर्यटन से सम्पर्क स्थापित हो जाता है, अगर वह निम्नलिखित शर्तें पूर्ण करती हों–

1. यात्रा अस्थाई हो।
2. यात्रा ऐच्छिक हो।
3. यात्रा का अर्थ किसी प्रकार का पारिश्रामिक अर्जित करना नही हो।

संस्कृत साहित्य में पर्यटन के लिए तीन शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिन सबका उद्गम पर्यटन से हुआ है। पर्यटन का अर्थ है अपने निवास स्थान को छोड़कर कहीं बाहर जाना। ये तीन शब्द हैः–

पर्यटनः– इसका अर्थ है आराम एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए यात्रा करना।

देशाटनः– विदेशों में मुख्यतः आर्थिक लाभ के लिए यात्रा करना।

तीर्थाटनः– धार्मिक लाभों के कारण यात्रा करना।

यूनिवर्सल शब्दकोश के अनुसार, पर्यट कवह व्यक्ति है जो कि जानकारी प्राप्त करने तथा मनोरंजन करने के लिए यात्रा करता है ताकि अन्य व्यक्तियों को अपनी यात्रा का वर्णन दे सके।

साधारण तौर पर स्वीकार की गयी परिभाषा के अनुसार "पर्यटक वे अस्थाई आगन्तुक हैं जो कम से कम एक रात्रि के लिए यात्रा करने वाले देश में ठहरते हैं तथा जिनकी यात्रा का उद्देश्य विलासिता, व्यापार एवं पारिवारिक मेलजोल से सम्बन्धित है।"

पर्यटन भूगोल के घटक :–

पर्यटन भूगोल के घटकों में प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक घटक आते हैं।

प्राकृतिक घटकः–

पर्यटन भूगोल में प्रथम बड़ा घटक प्राकृतिक तत्वों का है। विश्व का सबसे अधिक पर्यटन प्राकृतिक नजारों को देखने के लिए होता है। मौसम एवं जीव, जन्तुओं की विविधताओं मानव को अपनी ओर आकृष्ट करती है। प्राकृतिक घटक के मुख्य भाग निम्नलिखित हैं–

1. **मौसम और जलवायुः–** मानव परिवर्तन के लिए अपने विपरीत वातावरण को पसंद करता है। उदाहरणस्वरूप भीषण गर्मी सहने वाले को हिमालय की वादियां पसंद आती हैं और घोर ठण्डे प्रदेशों में रहने वाले थार मरूस्थल को पसंद करते हैं। जलवायु और मौसम परिवर्तन से यात्रा और पर्यटन पर काफी प्रभाव पड़ता है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ कि जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यटक मौसम का उदय हुआ। गर्मियों के मौसम में लोग समुद्र तट और पहाडी इलाकों जैसे ठण्डे इलाकों की ओर जाते हैं और जाड़े के दिनों में गर्म स्थलों की ओर रवाना होते हैं। भारत में गर्मी के दिनों में जाड़े के दिनों की अपेक्षा कम अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आते हैं।
2. **धरातलीय विविधतायेंः–** पर्यटक को धरातलीय विविधता भी अपनी ओर आकर्षित करती है। इसमें पर्वत, पठार तथा मैदान आते हैं। उच्चतम् पर्वत श्रेणियों, हिमाच्छादित पर्वत चोटियों, सुन्दर

हिमनद, सभी पर्वतों की ओर मानव को आकर्षित करते हैं। अनेक सुरम्य घाटी एवं स्थल, पठारों एवं पहाड़ों पर स्थित होते हैं।

3. **हिमनद तथा जलराशियां:–** हिमनद को देखना मानव को हमेशा रोमॉचित करता है। अनेक हिमनद जैसे गंगोत्री, यमुनोत्री, हिस्पर, पिण्डार तथा यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका के अनेक हिमनद मानव के पर्यटन स्थल हैं। जलराशियों में नदियां, जलप्रपात, झील, आकर्षक समुद्री तट मनुष्य को आकर्षित करते हैं।

4. **वनस्पति एवंज ीव–जन्तुओं की विविधतायें:–** मानव वनस्पति तथा जीव–जन्तुओं की विविधतायें देखकर आनन्द की प्राप्ति कर सकता है। भूमध्यरेखीय सदाबहार कांगों एवं अमेजन के वन, कोणधारी वन तथा अनेक प्रकार के जीव जन्तु मानव को अपनी ओर खींचते हैं।

सांस्कृतिक घटक:–

पर्यटन भूगोल में दूसरा बड़ा घटक सांस्कृतिक घटकों का है। मानव इस धरातल पर अपनी आवश्यकता, रूचि तथा बुद्वि के अनुसार प्राकृतिक वातवरण के तत्वों से सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करता है। सांस्कृतिक घटक के मुख्य भाग निम्नलिखित है:–

1. **अधिवास एवं सड़कों:–** सांस्कृतिक घटकों में प्रथम महत्वपूर्ण घटक मानवीय आवास तथा सड़के हैं। रेल मार्ग, वायु मार्ग तथा आन्तरिक एवं सामुद्रिक जल मार्ग भी इसी के भाग है। आज परिवहन के अनेक द्रुतगामी साधनों ने यातायात को सरल बना दिया है।

2. **ऐतिहासिक इमारतें:–** आज हमारा इतिहास हमारे क्रमिक विकास का साक्षी है। चीन की दीवार, मिस्र के पिरामिड, बेबिलोन के लटकते उद्यान, रोमन शिलालेख, ब्राजील के महलए विश्व की धरोहर है। इसी प्रकार से अशोक के शिलालेख, ऐलीफेण्टा त्रिमूर्ति, अकबर द्वारा निर्मित किले, फतेहपुर सीकरी, कुतुबमीनार, शाहजहां द्वारा निर्मित ताजमहल, जामा मस्जिद, लाल किला, सभी हमको उस गौरवशाली परम्परा की याद दिलाते हैं।

3. **राजनैतिक एवं प्रशासनिक इमारतें:–** राजनैतिक एवं प्रशासनिक इमारतें इतनी भव्य अलंकारिक एवं तकनीकी ढंग से बनी होती हैं कि मानव अपने–आप ही उनकी ओर आकर्षित हो जाता है। जैसे– अमेरिका का व्हाइट हाउस, यू0 एन0 का प्रशासनिक भवन, भारतीय संसद आदि सभी इमारतें यात्रियों को अपनी ओर लुभाती है।

4. **धार्मिक इमारतें:–** मानव ने धर्म के रूप में जितने युद्ध एवं विध्वंस किये है, उतने किसी और वस्तु के लिए नहीं। प्रत्येक धर्म का अनुयायी अपने धर्म को पुरातन और वैज्ञानिक मानता है। इसलिए वास्तुकला के अनेक भव्य उदाहरण अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर धर्म के हैं। रोम का केथोलिक चर्च, इजरायल की अल– अक्सा मस्जिद, मक्का मदीने की मस्जिद, हिन्दू धर्म के अनेक मन्दिर जैसे कोणार्क का सूर्य मन्दिर, मदुरई का मीनाक्षी मन्दिर, मामल्लपुरम् के रॉक कट मन्दिर, दिलवाडा मन्दिर आदि। सभी मन्दिर वास्तुकला के बेजोड नमूने हैं जिनको देखने करोडों पर्यटक आते हैं।

5. **प्रमुख मेले एवं त्यौहारः–** प्रमुख मेलों में भी व्यक्ति दूर–दूर से भाग लेने आते हैं। भारत में अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक मेले लगते हैं। कुम्भ का मेला विश्व का सबसे बड़ा मेला होता है जो चार पवित्र स्थानों इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन तथा नांसिक पर लगता है। कार्तिक मेला, पंजाब का वैसाखी मेला आदि के साथ–साथ अनेक त्यौहार मनाने के लिए अपने–अपने घरों से दूर–दूर जाते है तथा इसी प्रकार के कई त्यौहार महत्वपूर्ण हैं, जैसे दशहरा, दीपावली, होली, ईद, क्रिसमस, गुडफ्राइ–डे आदि।

6. **प्रमुख राष्ट्रीय दिवसः–** राष्ट्रीय पर्व देश के आत्म स्वाभिमान के पर्व होते हैं। प्रत्येक राष्ट्र इन पर्वों को यादगार रूप में मनाना चाहता है। जैसे 14 जुलाई (फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस), 4 जुलाई (अमेरिका का राष्ट्रीय दिवस), 15 अगस्त (भारत का स्वतंत्रता दिवस) तथा 26 जनवरी (भारत का गणतंत्र दिवस) आदि। ये सभी समारोह पर्यटकों के लिए भव्य एवं आकर्षक होते हैं।

7. **हस्तशिल्प प्रदर्शनी, पुस्तक मेला, फिल्म मेला तथा पेंटिंग आदिः–** कला मनुष्य के अन्तर्मन के सुन्दरतम पक्षों को उजागर करती है। हस्तशिल्प प्रदर्शनी में मानव द्वारा बनायी गयी उत्कृष्ट वस्तुएं, पुस्तक मेले में विभिन्न शीर्षकों पर पुस्तकें आदि एक स्थान पर मिल जाती हैं। विश्व की महत्वपूर्ण फिल्मों का मेला कभी–कभी लगता है जिसमें एक से एक कलात्मक फिल्म देखने का अवसर प्राप्त होता है। पेंटिंग की प्रदर्शनी भी कला प्रेमियों को आकर्षित करती है।

8. **राष्ट्रीय उद्यान एवं वनस्पति उद्यानः–** राष्ट्रीय उद्यान एवं वनस्पति उद्यान भी मानव के आकर्षण के केन्द्र बिन्दु होते है। प्रत्येक देश में दुर्लभ वनस्पति एवं वन्य जीवों को बचाने के लिए राष्ट्रीय उद्यान एवं वनस्पति उद्यान को बनाया जाता है।

9. **पक्षी विहार एवं वन्य जीव अभ्यारणः–** पक्षी विहार एवं वन्य जीव अभ्यारण सदैव ही मानव के आकर्षण का केन्द्र दुर्लभ पशु पक्षियों को देखने के लिए वन जाते हैं।

10. **संगीत एवं नृत्यः–** संगीत मानव को स्वर्गिक आनन्द की प्राप्ति कराता है। अनेक प्रसिद्ध कलाकार अपनी संगीत कला का प्रदर्शन करते हैं जिनको देखने अनेक लोग आते हैं। नृत्य को चाक्षुष यज्ञ कहा जाता है, जिसमें दर्शक अपने आंख से कला को देखकर अलौकिक सुख का अनुभव करता है। शास्त्रीय नृत्य जैसेः– भरतनाट्यम, कथकली, कुचीपुडी, कत्थक, ओडिसी आदि तथा कई प्रकार के लोक नृत्यों को जब देश अथवा विदेशों में आयोजित किया जाता है तब उनको देखने के लिए पर्यटकों एवं दर्शकों की भीड उमड. पडती है।

इस प्रकार उपर्युक्त प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक घटकों के द्वारा पर्यटक इनकी ओर आकर्षित होते है।

पर्यटन भूगोल का व्यावहारिक महत्वः–

पर्यटन भूगोल, भूगोल की नवीनतम शाखा है, विश्व की विभिन्नताओं का अध्ययन भूगोल विषय का केन्द्र बिन्दु रहा है। विश्व की इसी विभिन्नता का आनन्द लेने के लिए पर्यटक घर से निकलता है। पर्यटन उद्योग किसी भी युवा के सपनों को पूरा करने में आज सक्षम है। यह पर्यटन भूगोल का सबसे अधिक व्यावहारिक पक्ष है।

पर्यटन व्यवस्था पर्यटन क्षेत्र में मात्र–पूर्ति से उत्पन्न कठिनाइयों के समाधान का प्रयास है। बाजार की अव्यस्था के कारण यह समाधान कभी–कभी कठिन हो जाता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए सही प्रबंधन और नियोजित पर्यटन की आवश्यकता है। अतः पर्यटन को नियंत्रित करने के लिए इसके निषेद्यात्मक पक्ष को रोकना होगा तभी पर्यटन का सही विकास होगा। पर्यटन के निषेद्यात्मक पहलू को दूर करने के लिए पर्यटन के कुप्रबन्धन को ठीक करना होगा।

पर्यटन का व्यवहारिक महत्व नौजवानों को रोजगार के अच्छे अवसर प्रदान करना है। पर्यटन उद्योग में कार्य कई चरणों में पूरा किया जाता है। उदाहरण के लिए यात्रा, ठहरने, खाने का प्रबन्ध, शापिंग, मनोरंजन आदि से सम्बन्धित अन्य कार्य। पर्यटन उद्योग यात्री सेवा पर आधारित इस उद्योग की विभिन्न शाखाओं में बेरोजगार युवाओं को नये–नये अवसर प्रदान करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पर्यटन भूगोल, भूगोल विषय के ही एक व्यावहारिक महत्व का हिस्सा है जिसमें पर्यटन के प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक तत्वों को भूगोल की दृष्टि से अवलोकन किया जाता है ताकि एक पर्यटक अपनी यात्रा का आनन्द ले सके।

निष्कर्ष:– भारत एक विविधतों वाला देश है, यहॉ पर एक सपेरे से लेकर हिमाच्छादित हिमालय पर्वत की श्रंखलायें, साधारण नृत्य से लेकर बडे–बडे पर्वतीय शिकारगाह, पर्यटक के लिए मुख्य आकर्षण इस देश में विद्यमान हैं। प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भारत विश्व के देशों में पर्यटन हेतु एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आधुनिक पर्यटन एवं आरामदायक यात्रा की सफलता के लिए बहुत ही आवश्यक होगा कि पर्यटन से सम्बन्धित प्राथमिक एवं सहायक व्यापारों में सामंजस्य किया जाये।

पर्यटन स्थलों की भी अपनी आयु होती है, अन्य उत्पादों की तरह उनका भी विकास, विस्तार, पतन और विनाश होता है। जरूरत से ज्यादा भीड़ बढने और बदलती प्रवृत्तियों और जीवन शैलियों के कारण पतन आरंभ होता है। पर्यावरण संबंधी चेतना और वैकल्पिक मतों के विकास के साथ–साथ आंदोलन के कारण भी पर्यटकों के नजरिए में फर्क आता है और इससे प्रभावित होकर पर्यटक भीड–भाड इलाके और बनी बनाई लीक से दूर भागते हैं।

पर्यटन एक ऐसा विषय है जिसने सारे पर्यावरणीय विशेषज्ञों को दुनियाभर मे चिन्तित कर रखा है। पर्यटक विभिन्न स्थानों से अवकाश लेकर मनोरंजन के लिए भ्रमण करते हैं और बुनियादी तौर पर अच्छा समय व्यतीत करते हैं। यह उस समय अप्रिय हो जाता है, जब पर्यटक अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थानीय संसाधनों को क्षतिग्रस्त करते हैं। प्रकृति पर आधारित पर्यटन के कारण पर्यावरण मापदण्ड पर अक्सर खतरा मण्डराने लगता है। सरकार लाभ कमाने के लिए पर्यटन का विकास करती है, जिससे पर्यटन उद्योग का विस्तार होता है। पर्यावरण और पर्यटन के बीच एक अंतः संम्बन्ध पाया जाता है जो एक दूसरे के मापदण्डों को प्रभावित करते हैं किन्तु यदि पर्यटन का विकास अनियोजित और अनियंत्रित ढंग से हुआ तो कोई भी पर्यावरण पर उसके गंभीर प्रभाव को इंकार नहीं कर सकता।

सन्दर्भिका:–

1, आनन्द एम0 एम0:– भारत में पर्यटन एवं होटल उद्योग– प्रबन्ध में एक स्थिति अध्ययन, प्रिन्टिस हॉल आफ इण्डिया।

2. अग्रवाल परवीज:– क्षेत्रीय पर्यटन का विकास, इकोनोमिक्स टाइम्स।

3 डॉ0 मनोहर सजनानी:– इण्डियन टूरिज्म बैजनस ज्ञान पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।

4 ऊषा बाला:– टूरिज्म इन इण्डिया, अरूषी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

5 जगन्नाथ, एस0:– पर्यटन के सामाजिक एवं आर्थिक महत्व, जर्नल आफ इन्डस्ट्रीज एण्ड ट्रेड।

6 रणदीप सिंह:– टूरिज्म मार्किटिंग, कृष्णा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

7 एम0एस0एस0 रावत:– सैन्टरल हिमालय इन्वारनमैन्ट और डवलपैमेंट Vol.1, मीडिया हाऊस, श्रीनगर, उत्तरांचल।

8 नवीन:– टूरिस्ट इण्डिया, टूरिस्ट पब्लिकेशन, दिल्ली।

9 सारिस, स्वामी और महारानी:– इण्डिया, लोनली प्लेनट पब्लिकेशन, पैरिस, फ्रांस।